आयुर्वेद में ज्यादा से ज्यादा शोध की जरूरत

सिटी रिपोर्टर • भदभदा रोड स्थित रानी दुलैया स्मृति आयुर्वेद महाविद्यालय में 'आयुर्वेद के वैश्वीकरण में नई संभावनाएं' विषय पर दिवसीय सेमिनार 'निरामय-2016' की शुक्रवार को शुरुआत हुई। यहां अमृता स्कूल ऑफ आयुर्वेद, केरल के रिसर्च डायरेक्टर डॉ. पी. मनोहर ने कहा कि यदि हमें आयुर्वेद को वैश्विक बनाना है, तो हमारी शोध को अंतरराष्ट्रीय मापदंडों के अनुरूप बनाना होगा।

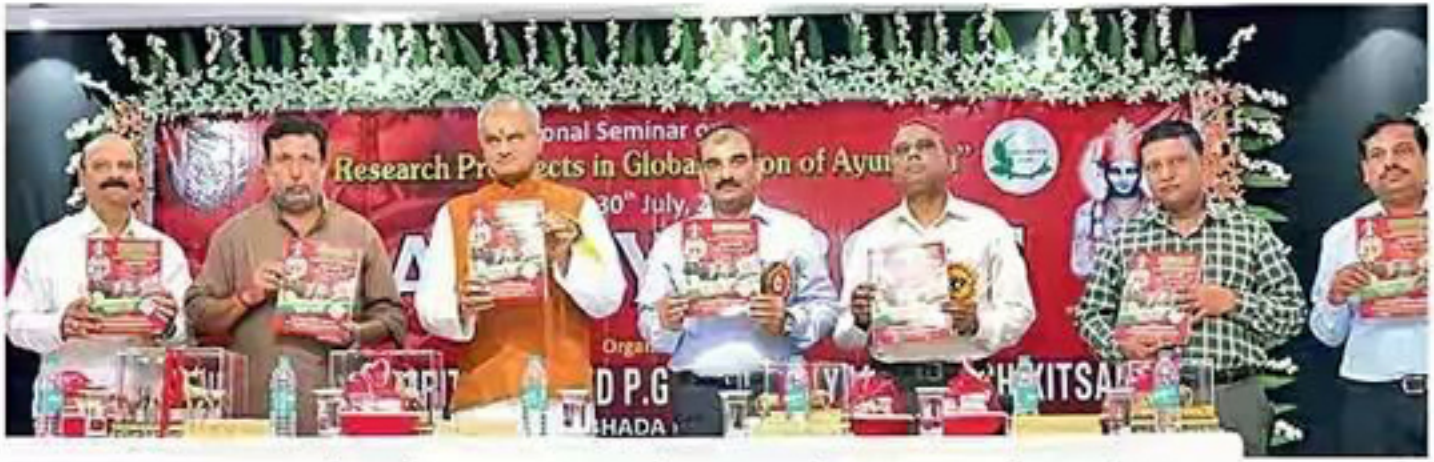

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में बीते 5 हजार सालों में बदलाव नहीं आए हैं, जबकि आधुनिक चिकित्सा पद्धति तकनीक, मशीनों व अन्य मामलों में लगातार बदल रही है। जवाहरलाल नेहरू कैंसर हॉस्पिटल के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. एन. गणेश ने कहा कि आयुर्वेद में कैंसर जैसी बीमारी को ठीक करने की क्षमता है, लेकिन ज्यादा रिसर्च न होने की वजह से इस दिशा में प्रगति धीमी है। इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह पहचान नहीं मिल पा रही है। उन्होंने कहा कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति से तालमेल बिठाकर कैंसर जैसी घातक बीमारी के इलाज को संभव बनाया जा सकता है। रीजनल फोरेंसिक लेबोरेटरी, भोपाल के संयुक्त निदेशक डॉ. हर्ष शर्मा ने फोरेंसिक साइंस में मृतक व्यक्ति की मौत के कारणों को खोजने में आयुर्वेद की भूमिका के बारे में चर्चा की।